विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

डेटा सुरक्षा: सावधानी को अपना कवच बनाएं!

आप किसी रेस्तरां में जाते हैं। बैठते ही या फिर भुगतान करते समय आपसे मोबाइल नम्बर पूछा जाता है, और आप सहज भाव से बता देते हैं। आप किसी स्टोर में जाते हैं, कुछ ख़रीददारी करते हैं। जब बिलिंग काउंटर पर जाते हैं तो आपसे आपका मोबाइल नम्बर पूछा जाता है। कुछ लोग तुरंत बता देते हैं। कुछ ना-नुकर करते हैं। इस पर बिलिंग करने वाला कहता है कि आप जो मोबाइल नम्बर देंगे उसी पर आपको कैशमीमो भेजा जाएगा। आप नंबर दे देते हैं। बहुत कम लोग हैं जो यह कहें कि स्टोर वाला उन्हें बिल दे न दे, वे मोबाइल नम्बर नहीं देंगे।

आप किसी वेबसाइट पर जाते हैं और उसकी किसी सुविधा का उपभोग करना चाहते हैं। आपसे कुछ अनुमतियां मांगी जाती हैं, और आप बग़ैर पढ़े खटाखट सारी अनुमतियां दे देते हैं।

आप गूगल प्ले स्टोर से कोई मुफ्त का एप डाउनलोड करके जब अपने मोबाइल में उसे इंस्टॉल करते हैं, तो आपसे कुछ अनुमतियां ली जाती हैं। क्या आपने कभी यह पढ़ने का कष्ट किया है कि वे अनुमतियां किन बातों की हैं? क्या आपने कभी यह प्रयत्न भी करके देखा है कि अगर आप वे अनुमतियां न दें तो क्या होगा?

आप किसी वेबसाइट पर जाते हैं और आपसे अनुमति ली जाती है कि वह वेबसाइट कुछ कुकीज़ का प्रयोग करना चाहती है। कुछ विकल्प भी होते हैं। आप जानते हैं कि कुकीज़ क्या होती हैं और आपको किस तरह की अनुमति देनी चाहिए और किस तरह की अनुमति नहीं देना चाहिए?

ऐसी बहुत सारी बातें हैं। इन सबका सार यह है कि हम अपनी साइबर सुरक्षा के प्रति, अपने निजी डेटा की रक्षा के प्रति बहुत कम सजग हैं।

सन् 2024 के आंकड़ों के अनुसार भारत में इंटरनेट के अस्सी करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं। और यह संख्या लगातार तथा बहुत तेज़ी से बढ़ती जा रही है। स्मार्ट फ़ोन सुलभ हैं, इण्टरनेट सस्ता है, इधर अपने लेन-देने में यूपीआई का चलन खूब बढ़ा है। उससे आसानी भी बहुत हो गई है। पहले की तुलना में अब अधिक लोग क्रेडिट कार्ड का प्रयोग करने लगे हैं। जो लोग थोड़े ज़्यादा एडवांस्ड हैं वे अपना बहुत सारा काम कंप्यूटर पर करते हैं और इंटरनेट उनकी ज़िंदगी का अभिन्न अंग बन चुका है। ई-कॉमर्स बढ़ता जा रहा है। हम बाज़ार जाकर ख़रीददारी करने की बजाय किसी ई कॉमर्स साइट (जैसे अमेज़ॉन, फ्लिपकार्ट आदि) पर जाकर अपनी ज़रूरत का सामान मंगवाना अधिक सुविधाजनक मानते हैं। खाने-पीने के शौकीन अपने शौक के लिए या कामकाज़ी लोग अपनी व्यस्तता की वजह से स्विगी-ज़ोमैटो जैसे सेवा प्रदाताओं की मदद से घर पर खाना मंगवाना सुविधाजनक मानने लगे हैं। स्थानीय परिवहन के लिए उबर-ओला-रैपिडो जैसी सेवाओं का उपभोग आम चला है। शौकिया रूप से भी विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपभोग करने वाली की संख्या बहुत बड़ी है। इधर अनेक कारणों से वॉट्सएप हमारी ज़िंदगी का अभिन्न अंग बन चुका है। भले ही निजी रूप से मुझे वह पसंद नहीं है, मेरा काम भी उसके बग़ैर नहीं चलता है, मुझे भी सका उपयोग करना ही पड़ता है।

मोबाइल, कंप्यूटर-इंटरनेट के इस बढ़ते जा रहे उपभोग के दौरान हम अपनी बहुत सारी जानकारियां साझा करते हैं, जैसे मोबाइल नम्बर, नाम, जन्म तिथि, पता, तस्वीर वगैरह। यह सब करते हुए हम अपना बहुत सारा निजी डेटा न केवल साझा करते हैं, उसके दुरुपयोग की संभावनाओं का भी विस्तार करते हैं। कुछ-कुछ वैसी ही बात है कि आप अपने घर के खिड़की दरवाज़े खुले छोड़ दें, और इस तरह चोरों को अमंत्रित करें कि आओ, हमारे यहां चोरी कर लो। यह कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि आज डेटा एक बहुत कीमती वस्तु बन चुका है और चोर-लुटेरे उसे हासिल करने का कोई मौका छोड़ नहीं रहे हैं। इसी कारण साइबर फ्रॉड बढ़ते जा रहे हैं। डेटा चोरी की वजह से हमारी पहचान की चोरी, उसका दुरुपयोग, वित्तीय हानि और मानसिक तनाव में इज़ाफा - कुछ भी हो सकता है। साइबर अपराधों की वजह से अकेले भारत में हर साल अरबों रुपये का नुकसान हो रहा है।

याद किया जा सकता है कि सन 2023 में कई निजी और सरकारी डेटाबेसों पर साइबर अटैक किए गए थे। फिशिंग के रूप में फर्ज़ी ईमेल या मैसेज भेज कर उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारियां प्राप्त कर उन्हें नुकसान पहुंचाने की वारदातें होती ही रहती हैं। विभिन्न कम्पनियों और संगठनों के शिथिल सुरक्षा प्रबंधों के कारण बहुत सारा मूल्यवान डेटा अपराधियों के पास पहुंच जाता है जिसका वे मनमाना उपयोग, बल्कि दुरुपयोग करके हमें क्षति पहुंचाते हैं।

भारत सरकार ने हमारे डेटा के संरक्षण के लिए एकाधिक प्रयास किए हैं। यह याद दिलाना प्रासंगिक है कि हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने 2018 में डेटा सुरक्षा के संदर्भ में गोपनीयता को मौलिक अधिकार घोषित किया था और उसके बाद से ही हमारे यहां डेटा संरक्षण को गंभीरता से लिया जाने लगा। इसके बाद आता है सन् 2000 का आईटी एक्ट जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में डेटा सुरक्षा और साइबर अपराध विषयक प्रावधान हैं। सन् 2023 में लाया गया डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट। यह एक्ट डेटा संग्रह, प्रसंस्करण और भंडारण के बारे में कड़े प्रावधान करते हुए यूज़र्स को अपने डेटा पर अधिक नियंत्रण प्रदान करते हुए उन्हें हटाने या सुधारने के अधिकार प्रदान करता है।

परंतु इन उम्दा प्रयासों और प्रावधानों के बावज़ूद हमारा डेटा और हमारी निजता सुरक्षित नहीं है। साइबर अपराधी कमज़ोर सिस्टम में लगातार सेंध लगा रहे हैं। याद किया जा सकता है कि सन 2023 में कई निजी और सरकारी डेटाबेसों पर साइबर अटैक किए गए थे। फिशिंग के रूप में फर्ज़ी ईमेल या मैसेज भेज कर उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारियां प्राप्त कर उन्हें नुकसान पहुंचाने की वारदातें होती ही रहती हैं। विभिन्न कम्पनियों और संगठनों के शिथिल सुरक्षा प्रबंधों के कारण बहुत सारा मूल्यवान डेटा अपराधियों के पास पहुंच जाता है जिसका वे मनमाना उपयोग, बल्कि दुरुपयोग करके हमें क्षित पहुंचाते हैं।

ऐसे में जहां सरकार से हमारी अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं, वहीं हमारी अपनी सजगता और ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है। यह जो हर जगह हमसे हमारा मोबाइल नम्बर मांगा जाता है उसे बहुत सोच-समझकर हमें देना चाहिए। किसी रेस्तरां को हम अपना नम्बर क्यों दें? हो सकता है उसके मन में उस डेटा के दुरुपयोग का कोई भाव न हो लेकिन उसकी असावधानी से हमारा डेटा किसी अवांछित तत्व के पास भी तो पहुंच सकता है। इसी तरह जब हम इंटरनेट का उपयोग करें तो हमें मज़बूत और अभेध्य पासवर्ड का प्रयोग करना चाहिए। प्राय: शॉर्टकट अपनाते हुए हम अपने किसी प्रियजन के नाम या जन्म स्थान वगैरह को अपना पासवर्ड बना लेते हैं जिसे बहुत आसानी क्रैक किया जा सकता है। आजकल तो बहुत सारे पासवर्ड मैनेजर भी हमारी मदद करने को तैयार रहते हैं। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि पासवर्ड इतना जटिल हो कि कोई उसकी कल्पना कर ही न सके। अपने इंटरनेट खातों, बैंक खातों, सोशल मीडिया खातों वगैरह के लिए हमें दो चरणों वाला प्रमाणीकरण अनिवार्यत: प्रयोग करना चाहिए। जब हम ऑनलाइन हों तो किसी भी अज्ञात लिंक पर क्लिक करने से पहले कई बार सोचें, और अगर ऐसा करने को टाला जा सके तो टाल ही दें। किसी भी अविश्वसनीय लालच में न फंसें। सोचें कि कोई भी हमें कुछ भी मुफ्त में क्यों देगा? ऐसे प्रस्तावों को पहली नज़र में ही अस्वीकार कर दें, इसी में आपकी भलाई है। गूगल प्ले स्टोर जैसे विश्वसनीय स्त्रोत से ही कुछ डाउनलोड करें। संदिग्ध एप्स कभी डाउनलोड न करें। मुफ्त एप्स को डाउनलोड करने के लालच से बचें। अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे जन्म तिथि, फोन नम्बर, घर का पता, फोटो वगैरह को साझा करने में जितनी ज़्यादा कृपणता बरतेंगे उतने ही सुरक्षित रहेंगे। और इस क्रम में आखिरी बात। पाइरेटेड सॉफ्टवेयर से बचें। उनकी जगह, चाहे वे महंगे ही क्यों न हों, ऑरिजिनल सॉफ्टवेयर काम में लें और उन्हें नियमित रूप से अपडेट करें। उनके साथ ही किसी विश्वसनीय एंटी वायरस का भी उपयोग ज़रूर करें।

जैसे-जैसे हमारे जीवन में तकनीक का उपयोग बढ़ता जा रहा है, उससे हमारा जीवन सुगम हो रहा है, उसके कारण नए खतरे भी चुनौती बन कर हमारे सामने आ रहे हैं। आज कोई आपकी जेब शायद न काटे, लेकिन वह आपके बैंक खाते में सेंध लगाकर आपको सड़क पर ला सकता है। जिसकी आपसे किसी भी तरह की शत्रुता है वह आपके किसी डेटा को चुराकर उसका मनचाहा दुरुपयोग कर आपको नुकसान पहुंचा सकता है। इस सबसे बचाव का एक ही तरीका है और वह है सावधानी बरतना। हमारे बैंक आदि नियमित रूप से हमें आगाह करते हैं। हमें उनके सुझावों और निर्देशों को गंभीरता से लेना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, विभिन्न समूहों को भी समय-समय पर साइबर सुरक्षा के लिए अभियान चलाने चाहिएं ताकि लोग सुरक्षित रह सकें। सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी तो ख़ुद हमारी है। जितने सावधान रहेंगे उतने ही सुरक्षित रहेंगे।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

इस परिणाम के बाद सरकारी स्कूलों में रुझान बढ़ेगा

राजेन्द्र जोशी

परम्पराएं, मूल्य और सांस्कृतिक परिवेश पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी धरोहर बनी हुई हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी विद्यालय बच्चों के ज्ञान का केंद्र रहा हैं। हमारे विद्यालय जीवन मूल्यों का आधार होने के साथ ही भरोसेमंद भी रहे है। नई शिक्षा नीति हर स्तर पर शिक्षकों को समाज में उच्चतर सम्मान और गुरुकुल का स्थान देने में संभवत सहायता करेगी। सरकारी विद्यालयों में जहां बुनियादी क्षमताओं के साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। देश में शिक्षा का बजट औसत रूप से अभी भी उतना नहीं है जितना होना चाहिए। बावजूद इसके सरकारी स्कूलों में संसाधन उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। आज भी सरकारी स्कूलों में अभिभावक अपने बच्चों को विश्वास के साथ भर्ती करवाते हैं।

सरकारी स्कूलों के संदर्भ में समाज में धारणाएं अभी भी निजी स्कूलों के मुकाबले ठीक नहीं हैं। अभिभावकों का मानना है कि पढ़ाई-लिखाई के मामले में सरकारी स्कूल के अध्यापक ध्यान नहीं देते जितना निजी स्कूलों में दिया जा रहा हैं। निजी स्कूलों की मोटी फीस और तामजाम अभिभावकों को आकर्षित करते रहे हैं। आंकलन किया जाए तो इनके मुकाबले सरकारी विद्यालयों में खर्च अधिक, स्टाफ प्रशिक्षित और मोटे वेतन के अध्यापक होने के बावजूद यह धारणा क्यों बनी है? इसका एकमात्र कारण निजी स्कूलों का परीक्षा परिणाम।

समाज का यह मानना है कि समुचित सुविधाओं के बावजूद सरकारी स्कूल अनुशासित तरीके से संकल्पित होकर बेहतर परिणाम क्यों नहीं दे पाते । फिलहाल सीबीएसई के 10वीं और 12वीं के नतीजे सुकून देने वाले आये हैं। निजी स्कूलों को सरकारी के मुकाबले अधिक उपयोगी माना जा रहा है। यह नतीजा स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि नई शिक्षा नीति 2020 के तहत वर्ष भर विद्यार्थियों को अतिरिक्त कक्षाओं के माध्यम से अध्ययन करवाना, बच्चों के शैक्षणिक स्तर को सुधारना और निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों काम अधिक से अधिक समय बिताना। वैसे अगर देखा जाए तो पिछले वर्षों में सरकारी स्कूलों में एनसीईआरटी के पाठ्यक्रमों के आधार पर परिणाम बेहतर होने लगे हैं। यह स्थितियां बनी रही तो अभिभावकों का रुझान सरकारी विद्यालयों की तरफ और अधिक होगा। सरकारी विद्यालय का परीक्षा परिणाम जिस तरीके से उछाल पर आया है उससे ऐसा लगता है की समाज में बनी धारणाएँ निजी स्कूलों का प्रोपेगेंडा तो नहीं है।

विचारणीय विषय तो यह है सरकारी स्कूलों के प्रशिक्षित अध्यापक इस चैलेंज को स्वीकार करें और अपनी प्रतिष्ठा को कायम रख सके। सरकारी स्कूलों में उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम से पढ़ाई होती है, केंद्रीय विद्यालयों के शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया और उनके वेतन में पहले से काफी सुधार हुआ हैं, अनुभवी शिक्षक होने के साथ ही स्कूलों का वातावरण सुधरने लगा हैं, वर्तमान नतीजे स्पष्ट करते हैं की विद्यालय का वातावरण और अधिक खुशनुमा बनाया जाए, बच्चों को प्रोत्साहित किया जाए, शिक्षकों की कमी को दूर किया जाए, विद्यार्थियों पर और अधिक ध्यान दिया जाए तो निश्चित रूप से परिणाम और अधिक बेहतर हो सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शिक्षा में अवसर उपलब्ध कराए जाए तो परिणाम बेहतर हो सकते हैं। केंद्रीय विद्यालयों की संख्या में भी बढ़ोतरी की जानी चाहिए। शहरी क्षेत्र में केवल सरकारी कार्मिकों के बच्चों के ऐडमिशन ही केंद्रीय विद्यालयों में हो रहे हैं। सरकार को केंद्रीय विद्यालयों की संख्या में बढ़ोतरी की जानी चाहिए।

केंद्रीय संगठन विद्यालयों पर सरकारी तरीके से नहीं बल्कि गैर सरकारी तरीके से शिक्षा को सरस्वती का मंदिर मानते हुए ध्यान दें, बेहतर अवसर उपलब्ध हो तो सरकारी विद्यालय कहीं भी किसी भी स्तर पर बेहतर परिणाम दे सकते हैं। समय-समय पर सरकारी तरीके से निरीक्षण ना हो बल्कि फ्रेंडली वातावरण के तहत अधिकारियों का अवलोकन हो तो निजी स्कूल सरकारी स्कूलों से आगे नहीं निकल सकती। जवाहर नवोदय विद्यालय जो कि ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत होने के बावजूद शत-प्रतिशत परिणाम के निकट पहुंच गए।

इस परिणाम के बाद सरकारी स्कूलों की तरफ विद्यार्थियों और अभिभावकों का रुझान बढ़ेगा, निजी स्कूलों का दिखावा कम होगा। मोटी फीस, बोझिल बस्ते और लटके-झटको से दूरी बनेगी। इस परिणाम से सरकारी स्कूल के वातावरण में जहां सुधार होगा वही बच्चों में विस्तृत ज्ञान और विविधता के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता विकसित होगी। जरूरी यह है की केंद्रीय विद्यालयों के शिक्षक इस उपलब्धि को बरकरार कैसे रखें, यह अवसर मिला है कि जब समाज में सरकारी स्कूलों के प्रति एक सकारात्मक रवैया बनाया जा सकता हैं। यह तभी संभव होगा जब उपलब्ध संसाधनों का भरपूर उपयोग किया जाए। और विद्यार्थी और अभिभावकों के साथ मेल-जोल बढ़ाया जाये। अनावश्यक बस्ते के बोझ को कम किया जाये और वर्ष भर शैक्षिक तंत्र में गुणवत्ता और जवाबदेही की बुनियादी प्रक्रिया स्थापित की जाए। वंचित और विशेष ध्यान देने योग्य विद्यार्थियों पर बराबर ध्यान केंद्रित हो।

–राजेन्द्र जोशी,
शिक्षाविद-साहित्यकार

करणीसर भाटियान में खेजड़ी के 179 पेड़ काटे, पटवारी ने मौका रिपोर्ट डंठल की बनाई

तहसीलदार ने एफआईआर दर्ज करने के लिए पुलिस को पत्र लिखा तो वापस लौटा दिया

बीकानेर, (निसं)। नोखा दहिया और जयमलसर में खेजड़ी के पेड़ काटने पर दो साल में एक ही कंपनी और उसके सहयोगियों पर 11 बार जुर्माना लगाया गया है। गजनेर स्थित उपनिवेशन तहसीलदार ने वर्ष 2023 और 2024 में खेजड़ी के पेड़ों की कटाई की शिकायतों की जांच कर सहायक आयुक्त उपनिवेशन के समक्ष 11 परिवाद पेश किए थे। यह सभी मामले दिल्ली और जोधपुर की फर्म व अन्य के विरुद्ध थे। इन सभी मामलों में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 86 के तहत 25900 रुपए जुर्माना वसूला गया था, यानी चोरी और वन अधिनियम की कार्रवाई के झंझट में नहीं फंसना पड़ा।

पूगल तहसील के करणीसर भाटियान में खेजड़ी के 179 पेड़ों पर आरी चल गई, लेकिन पटवारी ने मौका रिपोर्ट डंठल की बना डाली। तहसीलदार ने एफआईआर दर्ज करने के लिए पुलिस को पत्र लिखा तो वापस लौटा दिया गया। अब केवल जुर्माना वसूली की कार्रवाई करके फाइल को बंद कर दिया जाएगा। सोलर एनर्जी की आड़ में जिले के कमांड और अनकमांड क्षेत्रों में हरियाली चौपट हो रही है। राज्य वृक्ष खेजड़ी की बलि दी जा रही है। पर्यावरणप्रेमी इसे बचाने में लगे हुए हैं, जबकि कार्रवाई के नाम पर केवल जुर्माना लगाकर छोड़ा जा रहा है। ताजा मामला पूगल तहसील के करणीसर भाटियान का है, जहां हलका पटवारी ने खेजड़ी के 179 पेड़ काटने की पुष्टि अपनी रिपोर्ट में की है, लेकिन मौका रिपोर्ट डंठल की बनाकर इतिश्री कर डाली। कटी हुई खेजड़ी का क्या हुआ, यह रिपोर्ट में दर्ज ही नहीं है। मौका रिपोर्ट की कार्रवाई के दौरान मौजूद पर्यावरण प्रेमियों ने जेसीबी मशीन और ट्रैक्टरों के निशान तक पटवारी को दिखाए थे। जिन्हें रिपोर्ट का हिस्सा नहीं बनाया गया।

इसी रिपोर्ट के आधार पर पूगल तहसीलदार ने पूगल थाना एसएचओ को एफआईआर दर्ज करने के लिए पत्र लिखा, जिसे वापस लौटा दिया गया। इतना ही नहीं पेड़ों की चोरी और अवैध परिवहन के मामले में पुलिस और वन विभाग ने भी चुप्पी साध ली है। अब पता चला है कि इस प्रकरण में अब राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 86 में कार्रवाई कर रफा दफा करने की तैयारी की जा रही है, जिसके तहत एक पेड़ पर 100 रुपए जुर्माना लगाने का प्रावधान है। सौर प्लेटों की सफाई के लिए बड़ी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। इसकी तिरछी प्लेटों पर जब सूरज की किरणें सीधी पड़ती है तब स्थानीय तापमान में वृद्धि होती है। वनस्पति नष्ट होने से स्थानीय जीवों का खात्मा तय है। दूसरी और सौर ऊर्जा के लिए जो खेजड़ी, जाल, रोहिड़ा जैसे बड़े पेड़ काटे जाते हैं उससे पारिस्थितिकी का संतुलन नष्ट हो रहा है, क्योंकि ये पेड़ मरुस्थल के जल चक्र, भूमि की उत्पादकता, शाकाहारी और मांसाहारी जीवों के भोजन चक्र, स्थानीय जलवायु व इस पर निर्भर अर्थव्यवस्था के निर्धारक है।

राजस्थान राइजिंग ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट में सौर ऊर्जा के क्षेत्र में केवल बीकानेर जिले के लिए 19 लाख करोड़ रुपए के एमओयू किए गए हैं। इनमें एक गीगावाट तक के सोलर प्लांट लगाए जाने हैं। यानी मतलब साफ है, यदि हरियाली को बचाने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए तो पर्यावरण को और भी अधिक नुकसान होना तय है। जानकारी के अनुसार वर्तमान में करीब 19 सोलर कंपनियां ग्रामीण क्षेत्रों में प्लांट लगा रही हैं। यह सभी प्लांट नोखा दहिया, जयमलसर, रणधीसर, भानीपुरा, कावनी, जलालसर, खीचीया, कानासर, नूरसर, बदरासर, बांदवाला, सोनासर, भरूखेरा, करणीसर भाटियान, जालवाली, केला, बरारला, बरजु, मेहरासर, लाखूसर, नाथों की ढाणी, राजासर भाटियान, कालासर, हापासर, जामसर, जगदेवाला, सूरासर, रामसर, अमरपुरा, छीला कश्मीर, बीइनोक, बीकमपुर, देवड़ों की ढाणी, नाल बड़ी, नाल छोटी, कोडमदेसर, डाइया, गजनेर, खारी चारणान, गंगापुरा, गोविंदसर, गड़ियाला, गिरीजसर, दियातरा, आकावाली, डेय, छत्तरगढ़, सत्तासर, गोरीसर, करणीसर, शुभलाई आदि गांवों में लग रहे हैं।

बड़बर गांव में सड़क निर्माण के प्लांट से निकलने वाले धुएं से लोग परेशान

प्लांट से निकलने वाली धुआं से दो किलोमीटर के दायरे में चारों ओर प्रदूषण फैला रहा है, जिसके विरोध में दर्जनों लोगों ने प्लांट पर विरोध प्रदर्शन किया

बुहाना, (निसं)। बडबर गांव में सूरजगढ़-बुहाना सड़क मार्ग पर तीन वर्ष से एक सड़क निर्माण ठेकेदार ने डामर रोडी मिक्सचर प्लांट लगा रखा है। जिसमें तोड़ी गई पुरानी सड़कों का डामर व रोड़ी इस प्लांट में फिर से तैयार करते हैं। जिसका धुआं अधिक बनता है व जहरीला भी होता है। जिससे उठने वाले धुआं ने आस-पास रहने वाले लोगों का जीना दूभर कर रखा है। इस प्लांट से निकलने वाली धुआं से दो किलोमीटर के दायरे में चारों ओर प्रदूषण फैला रहा है। जिसके विरोध में दर्जनों लोगों ने प्लांट पर विरोध प्रदर्शन किया।

लोगों ने बताया कि पास-पड़ौस में रहने वाले घरों के बच्चों व बूढ़ों के स्वास्थ्य प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। आमजन व पशु अनेक बीमारियों से घिरते जा रहे हैं। इस प्लांट के आस-पास रहने वाले लोग गर्मी के मौसम में रात्रि को अपने घरों के बाहर नहीं सो सकते। सुबह उठते हैं तो सभी जगह काली धुआं की परत जमी रहती है। बाहर गलती से कोई कपड़ा रह गया तो सुबह उस पर कालिख जमी मिलती है। इतना ही नहीं किसानों के पशुओं के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस प्लांट के जहरीले धुएं से फसलों को भी नुकसान होता है। इस प्लांट के दो किमी के चारों ओर दायरे में होने वाला पशु चारा व घास एवं सूखे चारे को पशु मन मारकर खाते हैं। ग्रामीणों ने बताया समय रहते इस प्लांट को नहीं हटाया गया तो इस प्लांट के सामने अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन करने को विवश होना पड़ेगा। इस अवसर पर राजकुमार यादव, रामनिवास कौर्याणा, डेडराज, शीशराम गुर्जर, धनपत स्वामी, जयपाल, रामवतार गुर्जर, विजय यादव, हवलदार राजेंद्र यादव, अमित कुमार, अमीलाल यादव, सतवीर गुर्जर, रामप्रताप यादव आदि लोग मौजूद थे।

बडबर गांव में सूरजगढ़-बुहाना सड़क मार्ग पर डामर रोडी मिक्सचर प्लांट से निकलने वाले धुएं से आसपास रहने वाले ग्रामीण परेशान हो रहे हैं।

- **तीन वर्ष से एक सड़क निर्माण ठेकेदार ने डामर रोडी मिक्सचर प्लांट लगा रखा है**
- **तोड़ी गई पुरानी सड़कों का डामर व रोड़ी इस प्लांट में फिर से तैयार करते हैं, जिसका धुआं जहरीला होता है**

खेत मालिक ने बताया कि मैंने खेत ठेकेदार को रोड़ी डालने के लिए दिया था। उसने अपनी मनमर्जी से यह प्लांट लगा लिया, जो गलत है। इस प्लांट की धुएं से राजकुमार यादव की सात वर्षीय बालिका इतनी बीमार हो गई, जिसका इलाज जयपुर चल रहा है। डॉक्टरों ने यहां से घर छोड़कर दूसरी जगह रहने की सलाह दी है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 19 मई, 2025

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, श्रवण नक्षत्र सायं 7:30 तक, शुक्ल योग प्रात: 5:52 तक, वणिजकरण प्रात: 6:12 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-सिंह राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से प्रात: 6:12 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से सायं 7:30 तक है। रवियोग सायं 7:30 तक है। महापात योग दिन 10:25 से दिन 3:25 तक है।

भद्रा प्रात: 6:12 से सायं 6:12 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:22 तक, शुभ 9:02 से 10:43 तक, चर 2:04 से 3:44 तक, लाभ अमृत 3:44 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:05

मेष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति एवं व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका धन प्राप्त होगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। वाणी की कटुता के कारण परेशानी हो सकती है।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित मामलों में उचित सोच-विचार हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।